3, 71, 438
प्रसारण संख्या का विश्व कीर्तिमान रचने वाली भारत की एकमात्र बाल पत्रिका

सर्वाधिक प्रसारित हिन्दी बाल मासिक
देवपुत्र

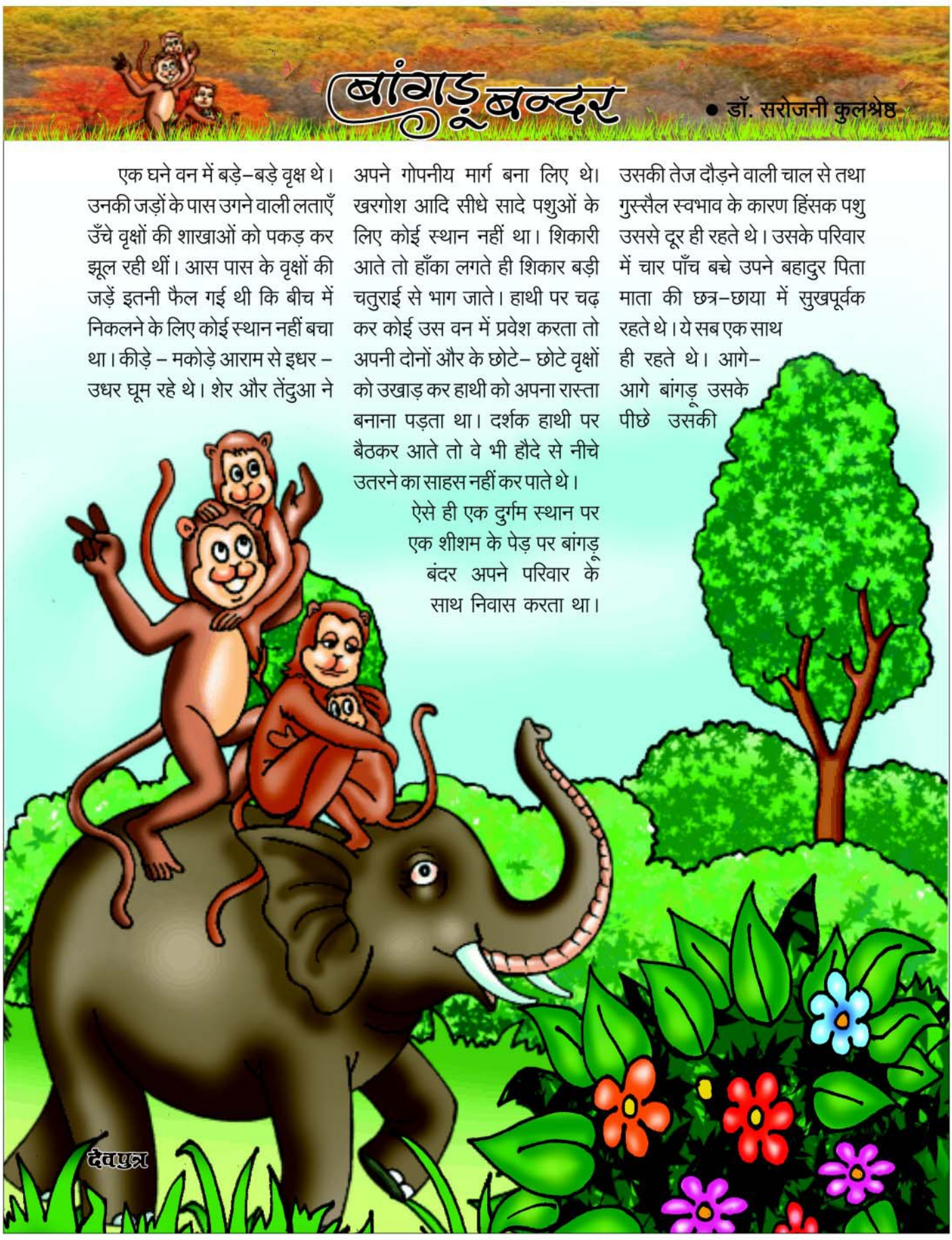

एक घने वन में बड़े–बड़े वृक्ष थे। उनकी जड़ों के पास उगने वाली लताएँ उँचे वृक्षों की शाखाओं को पकड़ कर झूल रही थीं। आस पास के वृक्षों की जड़ें इतनी फैल गई थी कि बीच में निकलने के लिए कोई स्थान नहीं बचा था। कीड़े – मकोड़े आराम से इधर – उधर घूम रहे थे। शेर और तेंदुआ ने अपने गोपनीय मार्ग बना लिए थे। खरगोश आदि सीधे सादे पशुओं के लिए कोई स्थान नहीं था। शिकारी आते तो हाँका लगते ही शिकार बड़ी चतुराई से भाग जाते। हाथी पर चढ़ कर कोई उस वन में प्रवेश करता तो अपनी दोनों और के छोटे– छोटे वृक्षों को उखाड़ कर हाथी को अपना रास्ता बनाना पड़ता था। दर्शक हाथी पर बैठकर आते तो वे भी हौदे से नीचे उतरने का साहस नहीं कर पाते थे।

ऐसे ही एक दुर्गम स्थान पर एक शीशम के पेड़ पर बांगड़ू बंदर अपने परिवार के साथ निवास करता था। उसकी तेज दौड़ने वाली चाल से तथा गुस्सैल स्वभाव के कारण हिंसक पशु उससे दूर ही रहते थे। उसके परिवार में चार पाँच बच्चे उपने बहादुर पिता माता की छत्र–छाया में सुखपूर्वक रहते थे। ये सब एक साथ ही रहते थे। आगे–आगे बांगड़ू उसके पीछे उसकी

3, 71, 438
प्रसारण संख्या का विश्व कीर्तिमान रचने वाली भारत की एकमात्र बाल पत्रिका

सर्वाधिक प्रसारित हिन्दी बाल मासिक
देवपुत्र

बंदरिया छोटे बच्चे को पेट से चिपकाकर चलती जाती थी। उसके पीछे छोटे बड़े तीन बच्चे उछलते कूदते पंक्तिबद्ध होकर चलते थे। पत्ते,फूल और फलों को स्वाद से खाते हुऐ वे सब एक छोटे तालाब के किनारे आ जाते। बंदरिया छोटे बच्चे को अपने से अलग कर स्वच्छन्द खेलने के लिए छोड़ देती। फिर वे सभी पंक्तिबद्ध होकर तालाब से पानी पीते। उन सबकी परछाई तालाब के पानी को दर्पण बना देती थी। इसीलिए वे बड़ी देर तक पानी पीने का आनन्द लेते रहते काफी देर के बाद में सभी अपने निवास स्थान को लौट जाते।

एक दिन एक हाथी पर बैठ कर कुछ लोग उस वन में आए उनके हाथों में कुल्हाड़ी और आरी थी। बांगड़ू बन्दर ने उन्हें देखा और खों–खों करने लगा। उसकी बंदरिया और बच्चे भी उसका साथ देने लगे वे लोग इस पर भी रुके नहीं पेड़ काटने के लिए आगे ही बढ़ते रहे तो बंदरिया उछलकर एक आदमी के कंधे पर चढ़ गई। उसके धक्के से उस आदमी के हाथ से कुल्हाड़ी छूट कर जमीन पर गिर पड़ी तो उसे बहुत क्रोध आया उसने बंदरिया को पकड़ने के लिए हाथ बढ़या तो बन्दर ने उसे जोर का धक्का दे दिया। उनके पास खड़ा दूसरा आदमी जमीन पर गिर पड़ा।

अब बांगड़ू ने उसको छोड़ आरा लेकर आए आदमियों पर आक्रमण किया। उनके कपड़े फाड़ डाले फिर जगह–जगह काट खाया। उनमें से एक आदमी के हाथ में पिस्तोल थी अचानक उस ने बांगड़ू को लक्ष्य करके गोली चला दी। बांगड़ू तो बच गया पर। बंदरिया घायल हो गई। अब तो वहाँ का दृश्य ही पलट गया। बराबर की लड़ाई होने लगी। क्रोध से बांगड़ू जैसे पागल हो गया। उसने उछल उछल कर उनको इतना घायल किया कि वे अपना आरा और कुल्हाड़ी वहीं छोड़ कर भाग गए। अब कुछ दूर से

इस दृश्य को देखने वाले साहब जैसे एक आदमी का क्रम आया। अभी तक तो वह तमाशा ही देख रहा था। यह बंदर क्या कर लेगा। इसके परिवार को जान से मार कर पेड़ काट कर ले जाएंगे और उसे बाजार में उँचे दामों पर बेचकर पैसा कमाएंगे पर बांगड़ू के सामने उसकी यह चाल नहीं चल पाई। वह भागकर उसके पास पहुँचा। उसी के पैरों से छाती पर और फिर सिर पर चढ़ गया। दांत किट किटाकर उसने उसे अपने दातों से कई जगह काट खाया। उसकी अन्तर्आत्मा ने जान लिया था कि असली जड़ तो यही आदमी है। मजदूर जैसे दो और आदमी बिचारे सहमे हुए खड़े थे। बांगड़ू कुछ क्षण रूका, उन्हें देखा फिर पेड़ से दो बेल के फल तोड़े और उनकी और फेंक दिए। वे बांगड़ू का यह आचरण देख कर बड़े प्रसन्न हुए। वे पशु तो उन हजारों लोगों से अच्छे हैं जो जानबूझकर हरे भरे वृक्षों को निर्दयता से कटवा देते हैं। और उसके बदले में नए लगाने का भी प्रयत्न नहीं करते।

इसी बीच बंदरिया भी कुछ स्वस्थ हो गई। वह उस दूर खड़े आदमी के पास गई। दाहिने हाथ को इस तरह झटका दिया कि उसके हाथ की बंदूक गिर गई। गुस्से में बंदूक को दांतों से दबा कर वह बांगड़ू को देखने लगी। बांगड़ू ने इशारा पहचाना और झटपट दौड़ कर वहाँ पहुँचा। दोनों मिल कर बंदूक को लेकर पेड़ पर चढ़ गए। बहुत ऊपर जाकर मोटी शाखाओं में उसे छिपा दिया अब तो वह व्यक्ति असहाय सा हो गया। जान बचा कर भागने के सिवाय और कोई चारा नहीं रहा। पर जाता कहाँ वन में ही घूमघूम कर मर गया।

इस प्रकार एक बंदर ने पर्यावरण की रक्षा की। इस खुशी में बांगड़ू बन्दर परिवार हाथी पर जा बैठा। हाथी भी थम्मक थम्मक चल कर उन्हें उस वन की सैर कराने लगा। अब हाथी उन लोगों की पहुँच से बाहर था। वे कुल्हाड़ी वाले और आरे वाले पता नहीं कहाँ उस वन में भटक रहे होंगे। पता नहीं जीवित होंगे भी या नहीं। हाँ बांगड़ू अब भी उसी पेड़ पर शान से रहता है।

• नोएडा